डॉ. बिपिन पाण्डेय

# पिताजी का फोन

"किसका फोन था? किससे बात कर रहे थे? समग्र !" पी जी में रहने वाले रूममेट कौशल ने पूछा।

"अरे भाई! पिता जी का फोन था।"

"तुम्हारे बात करने के तरीके से मैं पहले ही समझ गया था कि तुम अपने पिताजी से बात कर रहे हो। वह तो मैं तुमसे कंफर्म कर रहा था।"

"अच्छा! आप तो बहुत समझदार हैं।"

" इसमें समझदार होने जैसी कोई बात नहीं है। जब भी पिताजी का फोन आता है ,तो सभी ऐसे ही जवाब देते हैं, जैसे तुम दे रहे थे- जी हाँ, बिल्कुल। समझ गया आदि-आदि।" ये पिताजी लोग अपने बच्चों को हर समय इंस्ट्रक्शन ही क्यों देते रहते हैं?"

" ये इंस्ट्रक्शन नहीं हैं, ये उनका कंसर्न है। हर पिता को अपने बच्चों की चिंता रहती ही है।अगर एक पिता अपने बच्चों को सही रास्ता नहीं दिखाएगा तो दूसरा कौन दिखाएगा?"

समग्र, मुझे तो ऐसा लगता है कि " एक उम्र के बाद पिताजी को अपने बच्चों के साथ दोस्त-सा व्यवहार करना चाहिए।"

भाई जी! आपकी बात अपनी जगह सही हो सकती है।पर मेरी सोच इस संबंध में आपसे थोड़ी अलग है। " माँ -बाप ही वे प्राणी हैं ,जो हर समय अपनी संतान के हित के बारे में सोचते हैं। दोस्त तो मतलब के साथी होते हैं और मुँहदेखी बात करते हैं।"

मुझे तो ये लगता है हम दोस्त तो बना सकते हैं पर पापा नहीं। इसलिए पिता जी को पिताजी ही रहना चाहिए, न कभी दोस्त बनना चाहिए और न हमें उनसे ऐसी अपेक्षा रखनी चाहिए कि वे दोस्त बनें। जिंदगी में सबका अपना-अपना महत्व है। कॉलेज से वापस आने के बाद अक्षत ने 'शू रैक' में नए जूते देखे तो चहक कर बोला, "माँ, बहुत प्यारे जूते हैं।किसके हैं?"

# नए जूते

"बेटा, ये तुम्हारे पापा के जूते हैं।उनके जूते पुराने हो गए थे, टूट भी रहे थे। कितनी बार मोची के पास लेकर जाते।"

योगेश कमरे में बेड पर लेटे-लेटे माँ-बेटे के मध्य होने वाले वार्तालाप को ध्यान से सुन रहे थे। उन्होंने सोचा, जूते तो अक्षत के भी पुराने हो गए हैं पर इस महीने तो अब उसके लिए जूते खरीदना संभव नहीं। उन्होंने मन ही मन अक्षत के लिए नए जूतों के लिए एक उपाय सोचा। अगले दिन वे ऑफिस नए जूते पहनकर चले गए और शाम को वापस आकर उन्हें झाड़- पोंछकर रख दिया।

पत्नी सुमन से कहा, "इन जूतों ने तो पैर काट दिया। इनमें पैरों को आराम नहीं लगता।"

अगले दिन जब वे अक्षत के पुराने जूते पहनकर ऑफिस जाने लगे तो सुमन ने उनके मन की बात भाँप ली।

जब अक्षत कॉलेज जाने के लिए तैयार होने लगा तो उसे अपने जूते नहीं मिले। उसने माँ से पूछा," माँ मेरे जूते नहीं मिल रहे। कहाँ रख दिए? यहाँ पर तो पापा के नए वाले जूते रखे हैं।"

"बेटा, आपके पापा कह रहे थे कि इन नए जूतों से पैरों में छाले पड़ गए हैं।चलने में परेशानी हो रही है।इसलिए तुम्हारे जूते पहनकर ऑफिस गए हैं। ऐसा करो , तुम उनके नए वाले जूते पहनकर कॉलेज चले जाओ।"

अक्षत खुशी-खुशी पापा के नए जूते पहनकर पहनकर चला गया।

दो दिन बाद रविवार को जब अक्षत ने अपने पापा के पैरों को देखा तो उनसे पूछा, पापा आपके पैरों में तो कहीं कोई छाला नहीं दिख रहा। माँ कह रही थीं कि नए जूतों से आपके पैरों में छाले पड़ गए थे इसलिए आप मेरे पुराने जूते पहनकर ऑफिस जा रहे थे।

"बेटा, मुझे वे जूते कुछ अच्छे नहीं लगे।वे चमकदार भी ज्यादा हैं। अब इस उम्र में इस तरह के जूते मैं पहनूँ ये अच्छा नहीं लगता। आप लोगों की बात और है।आप लोगों पर तो सब कुछ फबता है।अब नए जूते मैं पहनूँ या तुम पहनो, बात तो एक ही है।"

पिता जी की ये बात सुनकर अक्षत की आँखें नम हो गईं और वह समझ गया कि पिताजी अपने लिए खरीदकर लाए नए जूते दूसरे दिन से पहनकर ऑफिस क्यों नहीं गए।

केंद्रीय विद्यालय क्र.2, रुड़की,हरिद्वार


ISSN:2583-8849